रविवार 3 जनवरी, 2021

विषय — परमेश्वर

स्वर्ण पाठ: **गिनती 6 : 24-26**

"यहोवा तुझे आशीष दे और तेरी रक्षा करे*:* यहोवा तुझ पर अपने मुख का प्रकाश चमकाए, और तुझ पर अनुग्रह करे*:* यहोवा अपना मुख तेरी ओर करे, और तुझे शांति दे।"

उत्तरदायी अध्ययन: **यशायाह 2 : 2-5**
फिलिप्पियों 4 : 7

2 अन्त के दिनों में ऐसा होगा कि यहोवा के भवन का पर्वत सब पहाड़ों पर दृढ़ किया जाएगा, और सब
पहाडिय़ों से अधिक ऊंचा किया जाएगा; और हर जाति के लागे धारा की नाईं उसकी ओर चलेंगें।
3 और बहुत देशों के लोग आएंगे, और आपस में कहेंगे: आओ, हम यहोवा के पर्वत पर चढ़कर, याकूब के
परमेश्वर के भवन में जाएं; तब वह हम को अपने मार्ग सिखाएगा, और हम उसके पथों पर चलेंगे। क्योंकि
यहोवा की व्यवस्था सिय्योन से, और उसका वचन यरूशलेम से निकलेगा।
4 वह जाति जाति का न्याय करेगा, और देश देश के लोगों के झगड़ों को मिटाएगा; और वे अपनी तलवारें
पीट कर हल के फाल और अपने भालों को हंसिया बनाएंगे; तब एक जाति दूसरी जाति के विरुद्ध फिर
तलवार न चलाएगी, न लोग भविष्य में युद्ध की विद्या सीखेंगे॥
5 हे याकूब के घराने, आ, हम यहोवा के प्रकाश में चलें॥
7 तब परमेश्वर की शान्ति, जो समझ से बिलकुल परे है, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में
सुरिक्षत रखेगी॥

पाठ उपदेश

बाइबल

1. **भजन संहिता 29 : 11**

11 यहोवा अपनी प्रजा को बल देगा; यहोवा अपनी प्रजा को शान्ति की आशीष देगा॥

2. **लैव्यव्यवस्था 25 : 1**

1 फिर यहोवा ने सीनै पर्वत के पास मूसा से कहा,

3. लैव्यव्यवस्था 26 : 3, 4, 6 (*से* :), 8, 12, 13

3 यदि तुम मेरी विधियों पर चलो और मेरी आज्ञाओं को मानकर उनका पालन करो,
4 तो मैं तुम्हारे लिये समय समय पर मेंह बरसाऊंगा, तथा भूमि अपनी उपज उपजाएगी, और मैदान के वृक्ष अपने अपने फल दिया करेंगे;
6 और मैं तुम्हारे देश में सुख चैन दूंगा, और तुम सोओगे और तुम्हारा कोई डराने वाला न हो।
8 और तुम में से पांच मनुष्य सौ को और सौ मनुष्य दस हजार को खदेड़ेंगे; और तुम्हारे शत्रु तलवार से तुम्हारे आगे आगे मारे जाएंगे;
12 और मैं तुम्हारे मध्य चला फिरा करूंगा, और तुम्हारा परमेश्वर बना रहूंगा, और तुम मेरी प्रजा बने रहोगे।
13 मैं तो तुम्हारा वह परमेश्वर यहोवा हूं, जो तुम को मिस्र देश से इसलिये निकाल ले आया कि तुम मिस्रियों के दास न बने रहो; और मैं ने तुम्हारे जूए को तोड़ डाला है, और तुम को सीधा खड़ा करके चलाया है॥

4. 2 इतिहास 20 : 1, 3 (*से 2nd* ,), 4 (*से* :), 6, 9, 12, 14 (*से 1st* ,), 14 (आया), 15 (*से 5th* ,), 17, 18, 20-22, 30

1 इसके बाद मोआबियों और अम्मोनियों ने और उनके साथ कई मूनियों ने युद्ध करने के लिये यहोशापात पर चढ़ाई की।
3 तब यहोशपात डर गया और यहोवा की खोज में लग गया।
4 सो यहूदी यहोवा से सहायता मांगने के लिये इकट्ठे हुए।
6 यह कहने लगा, कि हे हमारे पितरों के परमेश्वर यहोवा! क्या तू स्वर्ग में परमेश्वर नहीं है? और क्या तू जाति जाति के सब राज्यों के ऊपर प्रभुता नहीं करता? और क्या तेरे हाथ में ऐसा बल और पराक्रम नहीं है कि तेरा साम्हना कोई नहीं कर सकता?
9 कि यदि तलवार या मरी अथवा अकाल वा और कोई विपत्ति हम पर पड़े, तौभी हम इसी भवन के साम्हने और तेरे साम्हने (तेरा नाम तो इस भवन में बसा है) खड़े हो कर, अपने क्लेश के कारण तेरी दोहाई देंगे और तू सुन कर बचाएगा।
12 हे हमारे परमेश्वर, क्या तू उनका न्याय न करेगा? यह जो बड़ी भीड़ हम पर चढ़ाई कर रही है, उसके साम्हने हमारा तो बस नहीं चलता और हमें हुछ सूझता नहीं कि क्या करना चाहिये? परन्तु हमारी आंखें तेरी ओर लगी हैं।
14 तब जकर्याह का पुत्र ... उस में मण्डली के बीच यहोवा का आत्मा समाया।

15 और वह कहने लगा, हे सब यहूदियो, हे यरूशलेम के रहनेवालो, हे राजा यहोशापात, तुम सब ध्यान दो।
17 इस लड़ाई में तुम्हें लड़ना न होगा; हे यहूदा, और हे यरूशलेम, ठहरे रहना, और खड़े रह कर यहोवा की ओर से अपना बचाव देखना। मत डरो, और तुम्हारा मन कच्चा न हो; कल उनका साम्हना करने को चलना और यहोवा तुम्हारे साथ रहेगा।
18 तब यहोशापात भूमि की ओर मुंह कर के झुका और सब यहूदियों और यरूशलेम के निवासियों ने यहोवा के साम्हने गिर के यहोवा को दण्डवत किया।
20 बिहान को वे सबेरे उठ कर तकोआ के जंगल की ओर निकल गए; और चलते समय यहोशापात ने खड़े हो कर कहा, हे यहूदियो, हे यरूशलेम के निवासियो, मेरी सुनो, अपने परमेश्वर यहोवा पर विश्वास रखो, तब तुम स्थिर रहोगे; उसके नबियों की प्रतीत करो, तब तुम कृतार्थ हो जाओगे।
21 तब उसने प्रजा के साथ सम्मति कर के कितनों को ठहराया, जो कि पवित्रता से शोभायमान हो कर हथियारबन्दों के आगे आगे चलते हुए यहोवा के गीत गाएं, और यह कहते हुए उसकी स्तुति करें, कि यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि उसकी करुणा सदा की है।
22 जिस समय वे गाकर स्तुति करने लगे, उसी समय यहोवा ने अम्मोनियों, मोआबियों और सेईर के पहाड़ी देश के लोगों पर जो यहूदा के विरुद्ध आ रहे थे, घातकों को बैठा दिया और वे मारे गए।
30 और यहोशापात के राज्य को चैन मिला, क्योंकि उसके परमेश्वर ने उसको चारों ओर से विश्राम दिया।

5. 2 इतिहास 7 : 14

14 तब यदि मेरी प्रजा के लोग जो मेरे कहलाते हैं, दीन हो कर प्रार्थना करें और मेरे दर्शन के खोजी हो कर अपनी बुरी चाल से फिरें, तो मैं स्वर्ग में से सुन कर उनका पाप क्षमा करूंगा और उनके देश को ज्यों का त्यों कर दूंगा।

6. यशायाह 32 : 17, 18

17 और धर्म का फल शांति और उसका परिणाम सदा का चैन और निश्चिन्त रहना होगा।
18 मेरे लोग शान्ति के स्थानों में निश्चिन्त रहेंगे, और विश्राम के स्थानों में सुख से रहेंगे।

7. यशायाह 57 : 15, 19-21

15 क्योंकि जो महान और उत्तम और सदैव स्थिर रहता, और जिसका नाम पवित्र है, वह यों कहता है, मैं ऊंचे पर और पवित्र स्थान में निवास करता हूं, और उसके संग भी रहता हूं, जो खेदित और नम्र हैं, कि, नम्र लोगों के हृदय और खेदित लोगों के मन को हर्षित करूं।

19 मैं मुंह के फल का सृजनहार हूं; यहोवा ने कहा है, जो दूर और जो निकट हैं, दोनों को पूरी शान्ति मिले;
और मैं उसको चंगा करूंगा।
20 परन्तु दुष्ट तो लहराते समुद्र के समान है जो स्थिर नहीं रह सकता; और उसका जल मैल और कीच
उछालता है।
21 दुष्टों के लिये शान्ति नहीं है, मेरे परमेश्वर का यही वचन है॥

8. यशायाह 59 : 1, 2

1 सुनो, यहोवा का हाथ ऐसा छोटा नहीं हो गया कि उद्धार न कर सके, न वह ऐसा बहिरा हो गया है कि
सुन न सके;
2 परन्तु तुम्हारे अधर्म के कामों ने तुम को तुम्हारे परमेश्वर से अलग कर दिया है, और तुम्हारे पापों के
कारण उस का मुँह तुम से ऐसा छिपा है कि वह नहीं सुनता।

9. हाग्गै 1 : 5, 6, 9 (क्यों)

5 इसलिये अब सेनाओं का यहोवा यों कहता है, अपनी अपनी चाल-चलन पर ध्यान करो।
6 तुम ने बहुत बोया परन्तु थोड़ा काटा; तुम खाते हो, परन्तु पेट नहीं भरता; तुम पीते हो, परन्तु प्यास नहीं
बुझती; तुम कपड़े पहिनते हो, परन्तु गरमाते नहीं; और जो मजदूरी कमाता है, वह अपनी मजदूरी की
कमाई को छेदवाली थैली में रखता है॥
9 सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है, ऐसा क्यों हुआ? क्या इसलिये नहीं, कि मेरा भवन उजाड़ पड़ा है
और तुम में से प्रत्येक अपने अपने घर को दौड़ा चला जाता है?

10. हाग्गै 2 : 6-9

6 क्योंकि सेनाओं का यहोवा यों कहता है, अब थोड़ी ही देर बाकी है कि मैं आकाश और पृथ्वी और समुद्र
और स्थल सब को कम्पित करूंगा।
7 और मैं सारी जातियों को कम्पकपाऊंगा, और सारी जातियों की मनभावनी वस्तुएं आएंगी; और मैं इस
भवन को अपनी महिमा के तेज से भर दूंगा, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है।
8 चान्दी तो मेरी है, और सोना भी मेरा ही है, सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है।
9 इस भवन की पिछली महिमा इसकी पहिली महिमा से बड़ी होगी, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है,
और इस स्थान में मैं शान्ति दूंगा, सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है॥

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 465 : 8-1

सवाल। — परमात्मा क्या है?

उत्तर। — ईश्वर निगमित, दिव्य, सर्वोच्च, अनंत मन, आत्मा, अंतर: मन, सिद्धांत, जीवन, सत्य, प्रेम है।

सवाल। — क्या ये शब्द पर्यायवाची हैं?

उत्तर। — हाँ वे हैं। वे एक पूर्ण ईश्वर का उल्लेख करते हैं। उनका उद्देश्य देवता की प्रकृति, सार और पूर्णता को व्यक्त करना है। ईश्वर के गुण न्याय, दया, ज्ञान, भलाई, और इतने पर हैं।

सवाल. — क्या एक से अधिक भगवान या सिद्धांत हैं*?*

उत्तर। — वहाँ नही है। सिद्धांत और उसका विचार एक है, और यह एक ईश्वर, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ और सर्वव्यापी होने के नाते है, और उसका प्रतिबिंब मनुष्य और ब्रह्मांड है।

2. 516 : 9-12

ईश्वर सभी चीजों का, उसकी अपनी समानता पर पक्षपात करता है। जीवन अस्तित्व में परिलक्षित होता है, सत्यता में सत्य, अच्छाई में ईश्वर, जो अपनी शांति और स्थायित्व प्रदान करता है।

3. 328 : 4-13

मनुष्यों का मानना है कि वे अच्छाई के बिना रह सकते हैं, जब भगवान अच्छा है और एकमात्र वास्तविक जीवन है। इसका परिणाम क्या है? दिव्य सिद्धांत के बारे में बहुत कम समझना जो बचाता है और ठीक करता है, नश्वर पाप, बीमारी, और मृत्यु से केवल विश्वास में छुटकारा पाते हैं। इन त्रुटियों को वास्तव में नष्ट नहीं किया जाता है, और इसलिए जब तक, यहाँ या उसके बाद नश्वर लोगों से चिपके रहना चाहिए, वे विज्ञान में भगवान की सच्ची समझ हासिल करते हैं जो उसके बारे में मानव भ्रम को नष्ट कर देता है और उसकी सहयोगीता की भव्य वास्तविकताओं को प्रकट करता है।

4. 329 : 26 (अगर)-31

यदि पुरुषों ने अपने वास्तविक आध्यात्मिक स्रोत को सभी आशीर्वाद माना, तो वे आध्यात्मिक के लिए सहारा लेने के लिए संघर्ष करेंगे और शांति से रहेंगे; लेकिन गहरी त्रुटि जिसमें नश्वर मन डूब जाता है, अध्यात्म के विरोध में उतना ही अधिक तीव्र होता है, जब तक कि त्रुटि सत्य तक नहीं पहुंच जाती।

5. 324 : 7-18

जब तक मनुष्य की सामंजस्य और अमरता अधिक स्पष्ट नहीं होती, हम परमेश्वर के सच्चे विचार को प्राप्त नहीं कर रहे हैं; और शरीर प्रतिबिंबित करेगा कि यह क्या नियंत्रित करता है, चाहे वह सत्य हो या त्रुटि, समझ या विश्वास, आत्मा या मामला। इसलिए "अब उसके साथ परिचित हो जाओ, और शांति से रहो।" चौकस, शांत और सतर्क रहें। जिस मार्ग से यह समझ पैदा होती है कि ईश्वर ही एकमात्र जीवन है, सीधा और संकीर्ण है। यह मांस के साथ एक युद्ध है, जिसमें हमें पाप, बीमारी, और मृत्यु पर विजय प्राप्त करनी चाहिए, या तो इसके बाद, या - निश्चित रूप से इससे पहले कि हम आत्मा के लक्ष्य तक पहुँच सकें, या परमेश्वर में जीवन पा सकें।

6. 265 : 5-15, 23-5

मनुष्यों को ईश्वर के प्रति समर्पण करना चाहिए, उनका स्नेह और उद्देश्य आध्यात्मिक रूप से विकसित होना चाहिए, - उन्हें होने की व्यापक व्याख्याओं के पास होना चाहिए, और अनंत के कुछ उचित अर्थों को प्राप्त करना चाहिए, - ताकि पाप और मृत्यु दर को दूर किया जा सके।

किसी भी तरह से, आत्मा के लिए कुछ भी होने का यह वैज्ञानिक अर्थ, मनुष्य को देवता में अवशोषण और उसकी पहचान के नुकसान का सुझाव देता है, लेकिन मनुष्य में बढ़े हुए व्यक्तित्व, विचार और कर्म का व्यापक क्षेत्र, एक अधिक विस्तृत प्रेम, एक उच्च और अधिक स्थायी शांति।

किसने महसूस किया है कि मानवीय शांति का नुकसान आध्यात्मिकता के लिए मजबूत इच्छाओं को प्राप्त नहीं हुआ है? स्वर्गीय भलाई के बाद की आकांक्षा इससे पहले कि हमें पता चले कि ज्ञान और प्रेम का क्या संबंध है। सांसारिक आशाओं और सुखों का नुकसान कई दिलों के आरोही मार्ग को उज्ज्वल करता है। भावना के दर्द हमें जल्दी से सूचित करते हैं कि भावना के सुख नश्वर हैं और यह आनंद आध्यात्मिक है।

अर्थ की वेदनाएँ नमस्कार हैं, यदि वे झूठे सुखदायक विश्वासों को मिटा देते हैं और भावनाओं को आत्मा से आत्मा तक पहुँचाते हैं, जहाँ ईश्वर की रचनाएँ अच्छी हैं, "हृदय को आनन्दित करता है।" यह विज्ञान की तलवार है, जिसके साथ सत्य त्रुटि को नष्ट करता है, भौतिकता मनुष्य के उच्च व्यक्तित्व और भाग्य को स्थान देती है।

7. 540 : 5-16

यशायाह में हम पढ़ते हैं: "मैं उजियाले का बनाने वाला और अन्धियारे का सृजनहार हूं, मैं यहोवा ही इन सभों का कर्त्ता हूं;" लेकिन भविष्यद्वक्ता ने ईश्वरीय कानून का उल्लेख करते हुए बुराई के प्रति विश्वास को अत्यंत बढ़ा दिया, जब उसे सतह पर लाया और उसके सामान्य भाजक, शून्य को कम किया। धारा को शुद्ध करने के लिए

मैला नदी-बिस्तर को हिलाया जाना चाहिए। नैतिक रासायनिककरण में, जब बुराई, भ्रम के लक्षण बढ़ जाते हैं, तो हम अपनी अज्ञानता में सोच सकते हैं कि भगवान ने बुराई को मिटा दिया है; लेकिन हमें यह जानना चाहिए कि ईश्वर का कानून तथाकथित पाप और उसके प्रभावों को उजागर करता है, केवल यह कि सत्य बुराई की सभी भावना और पाप करने की शक्ति को नष्ट कर सकता है।

8. 225 : 25-31

निरंकुश प्रवृत्तियाँ, नश्वर मन में निहित है और हमेशा अत्याचार के नए रूपों में अंकुरित होना चाहिए, दिव्य मन की कार्रवाई के माध्यम से निहित होना चाहिए।

सभी क्षेत्रों और नस्लों के पुरुष और महिलाएं अभी भी भौतिक अर्थों के बंधन में हैं, अज्ञानी अपनी स्वतंत्रता कैसे प्राप्त करें।

9. 226 : 5-17

अफ्रीकी दास की ओर से ईश्वर की आवाज़ अभी भी हमारी भूमि में गूँज रही थी, जब इस नए धर्मयुद्ध के हेराल्ड की आवाज़ ने सार्वभौमिक स्वतंत्रता के लिए आवाज़ उठाई, जो मनुष्य के अधिकारों को परमेश्वर के पुत्र के रूप में पूर्ण रूप से स्वीकार करने की माँग कर रहा था। पाप, बीमारी, और मृत्यु के भ्रूण मानव मन से त्रस्त हो जाते हैं और इसकी स्वतंत्रता को मानवीय युद्ध के माध्यम से नहीं, संगीन और रक्त से नहीं, बल्कि मसीह के दिव्य विज्ञान के माध्यम से जीता जाना चाहिए।

भगवान ने मानव अधिकारों का एक उच्च मंच बनाया है, और उन्होंने इसे दिव्य दावों पर बनाया है। इन दावों को कोड या पंथ के माध्यम से नहीं किया जाता है, लेकिन "पृथ्वी पर शांति, पुरुषों के प्रति सद्भाव" के प्रदर्शन में।

10. 232: 7-10 (*से*;)

सामंजस्यपूर्ण और शाश्वत होने के दावों के लिए सुरक्षा केवल दिव्य विज्ञान में पाई जाती है।

शास्त्र हमें सूचित करता है कि "भगवान से सब कुछ हो सकता है," — आत्मा के लिए सभी अच्छाई संभव है।

11. 96 : 12-20

यह भौतिक दुनिया अब भी परस्पर विरोधी ताकतों के लिए अखाड़ा बन रही है। एक तरफ कलह और निराशा होगी; दूसरी तरफ विज्ञान और शांति होगी। भौतिक विश्वासों का टूटना अकाल और महामारी, चाहत और

शोक, पाप, बीमारी और मृत्यु के रूप में प्रतीत हो सकता है, जो तब तक नए चरणों को मानते हैं जब तक कि उनका कुछ भी दिखाई नहीं देता। ये गड़बड़ी त्रुटि के अंत तक जारी रहेगी, जब सभी कलह को आध्यात्मिक सत्य में निगल लिया जाएगा।

12. 323 : 6-12

प्रेम के उत्तम उदाहरणों के माध्यम से, हमें धार्मिकता, शांति और पवित्रता की ओर अग्रसर होने में मदद मिलती है, जो विज्ञान के स्थल हैं। सत्य के अनंत कार्यों को निहारते हुए, हम विराम देते हैं, - भगवान की प्रतीक्षा करें। तब हम आगे की ओर धकेलते हैं, जब तक कि असीम विचार चलता नहीं है, और गर्भाधान से अपरिभाषित दैवीय महिमा तक पहुंचने के लिए पंख लगा हुआ है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने,

परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6